

60 की उम्र में खेत से मंच तक जंगली धान से बचा रहे जीवन!

वर्षिय सूची (Table of Contents):

- >> मुख्य अपडेट्स (Organic Farming Mission)...
- >> पारंपरिक से जुड़ी बुजुर्ग पीढ़ी का ज्ञान...
- >> जैविक खेती की सफलता के राज...
- >> किसानों को जागरूक करने वाला पला लोकनाट्य...
- >> सहयोग और प्रशिक्षण की कहानी...
- >> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न...

ओडिशा के एक आदवासी किसान ने रासायनिक खेती के खिलाफ 60 सालों तक लड़ाई लड़ी है और आज वह सैकड़ों किसानों को जंगली धान की खेती और जैविक कृषि की सच्चाई सिखा रहे हैं। ग्रीन रिवोल्यूशन के दौरान जब सबने रासायनिक खाद की ओर रुख किया, तब इस आदवासी किसान ने अपनी बुजुर्ग पीढ़ी की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को संरक्षित रखा। उनकी कहानी आज राष्ट्रीय स्तर पर प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

मुख्य अपडेट्स (Organic Farming Mission)

- >> संतोष धुआ ने तीन एकड़ जमीन पर सूना हरनी, कुसुम काली और काला चम्पा जैसे देसी धान लगाए हैं।
- >> उन्होंने पीतल पात्र में भुने चावल का पानी में गोबर मिलाकर पेजास्ट्रा बनाया, जो करिंट से बचाता है।
- >> ओडिशा डेसी बीहना मंच और संभाव संगठन के संपर्क से उन्होंने जैविक खेती का ज्ञान लिया।
- >> पला लोकनाट्य दिखाकर वे पर्यावरण संरक्षण और जैविक खेती का संदेश देते हैं।
- >> आदवासी समुदाय के किसानों को आटीएमए की सलाह के माध्यम से जैविक प्रणाली अपनाने में मदद मिल रही है।
- >> डॉ. सुभाष पालेकर और डॉ. सब्रमणा टीकी के प्रशिक्षण से जैविक उर्वरक का निर्माण अब उनके दैनिक काम है।

पारंपरिक से जुड़ी बुजुर्ग पीढ़ी का ज्ञान

इनके पतिानृपानी धुआ के समय से ही यह परिवार गोबर और पुरानी खेती विधि पर विश्वास करता था। 1976 में परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर संतोष ने पढ़ाई छोड़ दी और खेती पर लग गए। जब 2004-05 से 2010-11 तक वे आटीएमए के अध्यक्ष रहे, तब उन्हें ऑर्गेनिक टेक्नोलॉजी और स्थानीय किसानों के साथ काम करने का मौका मिला।

जैविक खेती की सफलता के राज

बीजामृतके लिए गोबर, गोमूत्र, मट्टी, पानी और चूने का मश्रण तैयार कर बीजों को इसमें 15 मिन तक भगीया जाता है। इसके बाद छाया में सुखाकरजीवामृतसे समृद्ध की गई जमीन में बोया जाता है।नीमास्त्र,अग्नसित्रऔरब्रह्मास्त्रका इस्तेमाल कीटों से बचाव के लिए किया जाता है। स्थानीयदेसी धानअक्सर कीट प्रतिरिधी होते हैं। यदकिभी कीट हमला करते हैं, तो इनजैविक उपायोंसे खेत को सुरक्षति रखा जाता है।

किसानों को जागरूक करने वाला पला लोकनाट्य

पला नाटकके जरएि संतोष लोगों को पर्यावरण संरक्षण औरजैविक खेतीका संदेश देते हैं। इस नाट्य नाटिका मेंजंगली धानऔरदेसी बीजके महत्व को दर्शाया जाता है। दर्शकों को इसके माध्यम सेरासायनिक मुक्त खेतीकरने के तरीके समझाए जाते हैं।

सहयोग और प्रशिक्षण की कहानी

सरोज कुमार मोहंतीऔर उनके संगठनओडीबीएमके माध्यम से संतोष कोजैविक खेतीका व्यावहारिक ज्ञान मिला। 2013-14 मेंसंभावके माध्यम से उन्हेंडॉ. सबरमणा टीकीसे मुलाकात हुई। इसके बाद 2017-18 मेंडॉ. सुभाष पालेकरके प्रशिक्षण सेजैविक उपायोंका निर्माण उन्होंने खुद किया। अब वे अपने गांव और आसपास के किसानों को यह तकनीक सिखाते हैं।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

जंगली धान की खेती मेंबीजामृत,जीवामृत,नीमास्त्रऔरपेजास्ट्राजैविक उपायोंका उपयोग किया जाता है। इनसे कीटों से बचाव और मट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है।

उन्होंने रासायनिक खेती के कारण होने वालीस्वास्थ्य समस्याओंऔर मट्टी की क्षमता खराब होने को देखा। इसलएि उन्होंने अपनी पुरानीपारंपरिक ज्ञान प्रणालीऔरजैविक खेतीको फिर से अपनाया।

पला नाटक के जरएिजंगली धान,देसी बीजऔरजैविक खेतीके महत्व पर जागरूकता दी जा रही है। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया जा रहा है।